

जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के
ग्रंथाधिराज समयसार पर
प्रवचनों का प्रसारण
अब **अरिहन्त चैनल** पर
अरिहन्त प्रतिदिन
प्रातः 6:08 से 6:38 तक

वर्ष : 43, अंक : 13

अक्टूबर (प्रथम), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये

वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

केवल विदुषी बहनों द्वारा -

सोलहकारण भावना ई-संगोष्ठी संपन्न

सोलहकारण भावनाओं पर आधारित ई-संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 13 से 20 सितम्बर तक किया गया, जिसमें केवल विदुषी बहनों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

- दिनांक 13 सितम्बर को गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल जयपुर ने की। मुख्य वक्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि श्रीमती आरती पाटनी सिंगापुर थे।

वक्ताओं में दर्शनविशुद्धि भावना पर ब्र.प्रज्ञा दीदी दिल्ली एवं विनय संपन्नता भावना पर डॉ. रंजना दिल्ली ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन श्रीमती शुचिता जितेन्द्र राठी पुणे ने किया।

- दिनांक 14 सितम्बर को गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती कमलाजी भारिल्ल जयपुर ने की।

वक्ताओं में शीलव्रतेष्वनतिचार भावना पर डॉ. ज्योति सेठी जयपुर एवं अभीक्षण ज्ञानोपयोग भावना पर सुश्री अनु शास्त्री दलपतपुर ने अपने विचार व्यक्त किये। गोष्ठी का संचालन श्रीमती दीक्षा आरोन ने किया।

- दिनांक 15 सितम्बर को गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती कुसुमजी चौधरी किशनगढ़ ने की।

वक्ताओं में संवेग भावना पर शाश्वत स्तुति सागर एवं शक्ति: त्याग भावना पर सुश्री पूजा शास्त्री लूणदा ने अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन श्रीमती अनुभूति लुहाड़िया मंगलायतन ने किया।

- दिनांक 16 सितम्बर को गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती सुनीताजी जैन अहमदाबाद ने की।

वक्ताओं में शक्ति: तप भावना पर सुश्री श्रुति शास्त्री जयपुर एवं साधु-समाधि भावना पर ब्र. आरती दीदी छिन्दवाड़ा ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन सुश्री सर्वदर्शी भारिल्ल जयपुर ने किया।

- दिनांक 17 सितम्बर को गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती लताजी जैन देवलाली ने की।

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा

श्री टोडरमल स्मारक भवन में

23वाँ आध्यात्मिक

शिक्षण-शिविर ऑनलाइन

रविवार, दिनांक 1 नवम्बर से 8 नवम्बर, 2020 तक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में आयोजित इस शिविर में विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन/अध्यापन किया/कराया जायेगा।

अतः अन्य शिविरों से पृथक् यह शिविर शास्त्री विद्यार्थियों के लिये तो उपयोगी होगा ही, जैनदर्शन के सूक्ष्म अध्ययन के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिये भी एक स्वर्ण अवसर होगा।

सभी साधर्मीजन ऑनलाइन

शिविर का अवश्य लाभ लें।

-: संपर्क सूत्र :-

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर,
जयपुर 302015 (राज.) फोन नं.-0141-2705581,
2707458 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com



⑥ सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रथम अध्याय (पीठबंध प्ररूपण) का सार -

(गतांक से आगे...)

अब पुराने श्रोता अर्थात् अभ्यासी श्रोताओं की बात करते हैं। यहाँ उनकी बात कर रहे हैं, जिनकी बुद्धि बहुत समय से शास्त्र सुनने से निर्मल हो गयी है, कुछ पूछना हो तो विनयवान होकर प्रश्न पूछते हैं, परस्पर में चर्चा करते हैं, वस्तु का निर्णय करने का प्रयत्न करते हैं। शास्त्राभ्यास में तल्लीन रहने से जिनकी बुद्धि धर्ममय हो गयी है, जो लोक निन्द्य कार्य नहीं करते - वे सब अभ्यासी श्रोता हैं। हम लोग किस प्रकार के श्रोता हैं? हमें अपने आपको टटोलना चाहिये।

पण्डितजी आगे बताते हैं कि श्रोतापना तो विशेष रूप से तब शोभता है, जब थोड़ा बहुत न्याय-व्याकरण का अभ्यास हो, क्योंकि जिनवाणी सुनते/पढते समय कभी-कभी व्याकरण की चर्चाएं भी आयेंगी, और कभी न्याय की चर्चाएं भी आयेंगी, यदि इनका किंचित् भी अभ्यास नहीं होगा तो विशेष मर्म समझ नहीं पाएंगे। इसलिये इनका थोड़ा बहुत अभ्यास वर्तना चाहिये।

न्याय-व्याकरण का अभ्यास प्रारम्भ करने के पूर्व यह भी देख लेना चाहिये कि हमारी योग्यता और उम्र कितनी है? यदि उम्र बहुत ज्यादा हो गयी हो, तो प्रयोजनभूत बातें ही पढना चाहिये, लेकिन यदि अपनी उम्र कम है और शक्ति/सामर्थ्य/योग्यता दिखती है, तो न्याय-व्याकरण का अभ्यास जरूर करना चाहिये। हमारे जैन महाविद्यालयों के माध्यम से जो शास्त्री कोर्स कराये जाते हैं, उसमें न्याय-व्याकरण का अभ्यास भी कराया जाता है। यदि वह करें तो बहुत अच्छा अन्यथा कम से कम मूल ग्रंथों का थोड़ा बहुत अर्थ निकाल सकें इतना तो अभ्यास कर ही लेना चाहिये।

इसी अध्याय में पहले पंच परमेष्ठी, नवदेवताओं को याद कर लिया, उनसे प्रयोजन की सिद्धि तथा मंगलाचरण करने का कारण भी बताया, वहां से आगे बढते-बढते वक्ता और श्रोता का स्वरूप बतला दिया, जिनवाणी का स्वरूप बतला दिया, अब कह रहे हैं कि ये जो ग्रंथ हम लिख रहे हैं, वह निरर्थक नहीं है। इसकी सार्थकता के संबंध में वे बताते हैं कि समाज में लोग बहुत दुःखी हैं, पीड़ित हैं, उन बेचारों का दुःख दूर होता नहीं है, वे चाहे जिसके पास में अपना दुःख मिटाने के लिये चले जाते हैं और

कोई भी चाहे जो उपाय बता देता है। ऐसे लुटेरे बहुत घूम रहे हैं, जो कहते हैं कि भैया पांच-पच्चीस हजार लगेंगे, आपका संकट मिट जायेगा। मैं एक जाप करा दूंगा, एक अनुष्ठान करा दूंगा, आपकी सब तकलीफें मिट जाएंगी। ये बेचारा मरता क्या न करता, उनके पास में जाकर ठगाया जाता है। पण्डित टोडरमलजी यह कहना चाहते हैं कि अपना भला तो तीर्थकर भगवान की वाणी सुनने से होगा। उनकी वीतरागी वाणी को सुनकर, अवधारणकर उनके बताये मार्ग पर चलने से भला होगा।

केवलज्ञान तो सूर्य है और सूर्य जब प्रकाशित होता है, तब अन्धकार अपने आप मिट जाता है। लेकिन जब सूर्य नहीं हो तब छोटे-छोटे दीपकों से काम चलाया जाता है। केवलज्ञान सूर्य के अस्त हो जाने पर गणधरादि तथा बाद में परम्पराचार्यों से चले आये ज्ञानदीपक से हमें अपने श्रुतज्ञान के छोटे-छोटे दीपक जला लेना चाहिये, इससे अपना काम हो जायेगा।

मानो पण्डित टोडरमलजी से सामने बैठे हुए श्रोता ने पूछा कि एक बात बताओ पहले ही शास्त्रों की कमी नहीं थी फिर तुम नया शास्त्र क्यों लिख रहे हो? तुम ये नया शास्त्र क्यों बना रहे हो? उसका जबाब देते हुए टोडरमलजी कह रहे हैं कि पहले जो ग्रंथ थे, वे प्राकृत और संस्कृत भाषा में लिखे हुए हैं, जो कि जनसामान्य के लिये बहुत कठिन हैं। जैसे जिस व्यक्ति के पास ज्यादा तेल नहीं हो, वह बड़ा दीपक नहीं जला सकता, किन्तु अपने पास उपलब्ध अल्प तेल से छोटा दीपक तो जला ही सकता है। उसी प्रकार हमारे पास में श्रुतज्ञानरूपी छोटा दीपक है, हम अपने छोटे से ज्ञानरूपी दीपक में अपनी रुचि और अभ्यासरूपी तेल डालकर उसे जलाये रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह भी हमारे प्रयोजन की सिद्धि में ही निमित्त बनेगा।

जिनकी ज्ञानादिक की शक्ति हीन है, जो बेचारे अल्प बुद्धि हैं, अल्प क्षयोपशम के धारी हैं, उन लोगों के लिये हम ये सरल भाषा में छोटा ग्रंथ बना रहे हैं। हमारे इस ग्रंथ के द्वारा भी वही प्रयोजन सिद्ध होगा जो बड़े ग्रंथों के माध्यम से होता है। आगे पेज नं. 19 की अन्तिम पंक्तियों में अपने मन के भाव व्यक्त करते हुए पण्डितजी लिखते हैं कि मैं यह सब कषाय से नहीं लिख रहा हूँ, अपनी मान प्रतिष्ठा बढाने के लिये नहीं लिख रहा हूँ, लोभ के लिये नहीं लिख रहा हूँ, अपनी पद्धति चलाने के लिये नहीं लिख रहा हूँ, लेकिन मैं तो सिर्फ भगवान की बात निःस्वार्थ भाव से आप तक पहुंचाने का प्रयत्न कर रहा हूँ, इसके अलावा मेरा कोई प्रयोजन नहीं है। जो जीव इन छोटे-छोटे ग्रंथों का भी अभ्यास करेगा, उसका निश्चित तौर पर भला होगा - इसलिये मूल ग्रंथों का आधार लेकर ही हमारे द्वारा देशभाषा में ग्रंथ बनाया जा रहा है।

(क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

वक्ताओं में वैयावृत्यकरण भावना पर सुश्री आयुषी जैन आत्मारथी दिल्ली एवं अर्हद्धक्ति भावना पर ब्र. प्रीति दीदी खनियांधाना ने अपने विचार प्रस्तुत किये। गोष्ठी का संचालन श्रीमती स्तुति जैन जयपुर ने किया।

● दिनांक 18 सितम्बर को गोष्ठी की अध्यक्षता ब्र. पुष्पाजी झांझरी उज्जैन ने की।

वक्ताओं में आचार्य भक्ति भावना पर शाश्वत मानसी घुवारा एवं बहुश्रुत भक्ति भावना पर डॉ. स्वाति जैन नवसारी ने अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन सुश्री प्रज्ञा जैन देवलाली ने किया।

● दिनांक 19 सितम्बर को गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती शिल्पाजी मोदी नागपुर ने की।

वक्ताओं में प्रवचन भक्ति भावना पर सुश्री नयना शास्त्री भोपाल एवं आवश्यकपरिहाण भावना पर श्रीमती पूजा भारिल्ल जयपुर ने अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन श्रीमती ज्योति मोदी सागर ने किया।

● दिनांक 20 सितम्बर को गोष्ठी की अध्यक्षता विदुषी राजकुमारीजी जैन धर्मायतन सनावद ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती अनिता जैन बड़ौदा उपस्थित थीं। विशेष उद्बोधन पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल व श्री अजितजी बड़ौदा एवं विशेष प्रवचन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

वक्ताओं में मार्ग प्रभावना भावना पर सुश्री हर्षिता जैन उदयपुर एवं प्रवचन वत्सलत्व भावना पर श्रीमती देशना जैन दिल्ली ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन श्रीमती रागिनी जैन आगरा ने किया।

गोष्ठी के मार्गदर्शक पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, मुख्य संयोजक पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, संयोजक ब्र. प्रीति दीदी खनियांधाना, श्रीमती प्रीति जैन जयपुर व श्रीमती रागिनी जैन आगरा एवं तकनीकी सहयोगी विनीत शास्त्री हटा रहे।

आत्मा का खोजी भी भूखा तो नहीं रहता, पर खाने-पीने में ही जीवन की सार्थकता उसे भासित नहीं होती। यद्यपि वह स्वास्थ्य के अनुरूप ही भोजन करेगा, पर अभक्ष्य भक्षण करने का तो प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। कमजोरी के कारण वह अनेक सुविधाओं के बीच भी रह सकता है, पर उसका ध्यान सदा आत्मा की ओर ही रहता है। खेलने-कूदने और मनोरंजन में मनुष्य भव खराब करने का तो प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

- चिंतन की गहराईयाँ, पृष्ठ 190

ज्ञानपहेली - मोक्षमार्गप्रकाशक-अध्याय 3 का उत्तर

		इ ²⁵	अ ¹⁵				उ ^{4 18}	छ	वा	स ¹⁹			
		न्द्रि ¹	अ	सं	य	म ¹⁶	क ^{3 17}	प	ट	म्य			
उ ^{12 26}	द	य	ख्या		म	ल्या	दे			ग्द			
पा			त		का ²	र	ण	श		र्श			
य			पु		र			सा ⁵	ध ²⁰	न			
			द्ग						र्मा	भ्र ²¹			
	नि ⁷	के	व	ल	ज्ञा	न			अ ⁶	नु	प	म	
		आ ²²		प		वि ^{10 23}	चा	र		रा			
		कु		रा		भू				ग			
	नी ⁸	ल		व ⁹	न	स्प	ति			उ ^{13 24}	प	भो	ग
		ता		र्त						प			
	प्र ¹¹	यो	ज	न						चा			
										स्म ¹⁴	र	ण	

ज्ञानपहेली अध्याय-3 के अन्तर्गत 37 उत्तर प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 16 उत्तर सही हैं, उनके नाम निम्नप्रकार हैं -

प्रथम स्थान - 1. भानु कुमार जैन, कोटा

द्वितीय स्थान - 2. किरण जैन, सूरत

तृतीय स्थान - 3. रीना जैन, शिवपुरी

सान्त्वना पुरस्कार -

4. कल्पना सुरेश जैन, उदयपुर

5. पारस जैन, इन्दौर

6. मन्जू जैन, जयपुर

7. भूपाल देवप्पा चौगुले, सांगली

8. मानसी जैन, दिल्ली

अन्य सही उत्तर देने वाले - 9. आरती हार्दिक जैन अहमदाबाद,

10. चारुल जैन दिल्ली,

11. ममता जैन मुम्बई,

12. मन्जू जैन ग्वालियर,

13. ओजस टोडरका जैन जयपुर,

14. रजनी जैन सूरत,

15. सलोनी जैन कोलारस,

16. उषा सावलकर नागपुर

- आप्त अनुशील जैन, दमोह (संयोजक)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें- वेबसाइट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

दिन का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
द्वितीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तृतीय	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चतुर्थ	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सप्तम	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
अष्टम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

जैनपथप्रदर्शक : जैनतिथिदर्पण

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५

१ जनवरी, २०२१ से ३१ दिसम्बर, २०२१ तक

श्री वीर निर्वाण सं. २५४७-२५४८ : विक्रम सं. २०७७-७८

रात का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
द्वितीय	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तृतीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चतुर्थ	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सप्तम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
अष्टम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

मास →	पौष		माघ		फाल्गुन		चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष																													
पक्ष →	१ जनवरी से २८ जनवरी		२९ जनवरी से २७ फरवरी		२८ फरवरी से २८ मार्च		२९ मार्च से २७ अप्रैल		२८ अप्रैल से २६ मई		२७ मई से २४ जून		२५ जून से २४ जुलाई		२४ जुलाई से २२ अगस्त		२३ अगस्त से २० सित.		२१ सित. से २० अक्टूबर		२१ अक्टूबर से १९ नव.		२० नवम्बर से १९ दिस.		२० दिस. से ३१ दिसम्बर																													
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार																										
प्रतिपदा			१४	गु	२९	शु	१२	शु	२८	र	१४	र	२९	सो	१२	सो	२८	बु	१२	बु	२७	गु	११	शु	२५	शु	१०	श	२४	श	९	सो	२३	सो	७	मं	२१	मं	७	गु	२१	गु	५	शु	२०	श	५	र	२०	सो	X	X		
द्वितीया	१	शु	१४	गु	३०	श	१३	श	१	सो	१५	सो	३०	मं	१४	बु	२८	बु	१३	गु	२८	शु	१२	श	२६	श	११	र	२५	र	१०	मं	२४	मं	८	बु	२२	बु	८	शु	२२	शु	६	श	२१	र	५	र	२१	मं	X	X		
तृतीया	२	श	१५	शु	३१	र	१४	र	१	सो	१६	मं	३१	बु	१५	गु	२९	गु	१४	शु	२८	शु	१३	र	२७	र	१२	सो	२६	सो	११	बु	२५	बु	९	गु	२३	गु	९	श	२३	श	७	र	२२	सो	६	सो	२२	बु	X	X		
चतुर्थी	३	र	१६	श	१	सो	१५	सो	२	मं	१७	बु	१	गु	१६	शु	३०	शु	१५	श	२९	श	१४	सो	२८	सो	१३	मं	२७	मं	१२	गु	२६	गु	१०	शु	२४	शु	९	श	२४	र	८	सो	२३	मं	७	मं	२३	गु	X	X		
पंचमी	३	र	१७	र	२	मं	१६	मं	३	बु	१८	गु	२	शु	१७	श	१	श	१७	सो	३०	र	१५	मं	२९	मं	१४	बु	२८	बु	१३	शु	२७	शु	११	श	२६	र	१०	र	२५	सो	९	मं	२४	बु	८	बु	२४	शु	X	X		
षष्ठी	४	सो	१९	मं	३	बु	१७	बु	४	गु	१९	शु	२	शु	१८	र	२	र	१८	मं	३१	सो	१६	बु	३०	बु	१५	गु	२९	गु	१४	श	२८	श	१२	र	२७	सो	११	सो	२६	मं	२७	बु	१०	बु	२५	गु	९	गु	२५	श	X	X
सप्तमी	५	मं	२०	बु	४	गु	१८	गु	५	शु	२०	श	३	श	१९	सो	३	सो	१९	बु	१	मं	१७	गु	१	गु	१६	शु	३०	शु	१५	र	२९	र	१३	सो	२८	मं	१२	मं	२८	गु	१०	बु	२६	शु	१०	शु	२६	र	X	X		
अष्टमी	६	बु	२१	गु	५	शु	२०	श	६	श	२१	र	४	र	२०	मं	४	मं	२०	गु	२	बु	१८	शु	२	शु	१७	श	३१	श	१५	र	३०	सो	१४	मं	२९	बु	१३	बु	२९	शु	११	गु	२७	श	११	श	२७	सो	X	X		
नवमी	७	गु	२२	शु	६	श	२१	र	७	र	२२	सो	५	सो	२१	बु	५	बु	२१	शु	३	गु	१९	श	३	श	१८	र	१	र	१६	सो	३१	मं	१५	बु	३०	गु	१४	गु	३०	श	१२	शु	२८	र	१२	र	२८	मं	X	X		
दशमी	८	शु	२३	श	६	श	२२	सो	८	सो	२४	बु	६	मं	२२	गु	६	गु	२२	श	४	शु	२०	र	४	र	१९	सो	३	मं	१७	मं	१	बु	१६	गु	१	शु	१५	शु	३१	र	१३	श	२९	सो	१३	सो	२९	बु	X	X		
एकादशी	९	श	२४	र	७	र	२३	मं	९	मं	२५	गु	७	बु	२३	शु	७	शु	२३	र	५	श	२१	सो	५	सो	२०	मं	४	बु	१८	बु	२	गु	१७	शु	२	श	१६	श	१	सो	१४	र	३०	मं	१४	मं	३०	गु	X	X		
द्वादशी	१०	र	२५	सो	८	सो	२४	बु	१०	बु	२६	शु	८	गु	२४	श	८	श	२३	र	६	र	२२	मं	६	मं	२१	बु	५	गु	१९	गु	३	शु	१७	शु	३	र	१७	र	२	मं	१५	सो	१	बु	१५	बु	३१	शु	X	X		
त्रयोदशी	११	सो	२६	मं	९	मं	२५	गु	११	गु	२६	शु	९	शु	२५	र	९	र	२४	सो	७	सो	२३	बु	७	बु	२२	गु	६	शु	२०	शु	४	श	१८	श	४	सो	१८	सो	३	बु	१६	मं	२	गु	१६	गु	X	X	X	X		
चतुर्दशी	१२	मं	२७	बु	१०	बु	२६	शु	१२	शु	२७	श	१०	श	२६	सो	१०	सो	२५	मं	९	बु	२३	बु	८	गु	२३	शु	७	श	२१	श	५	र	१९	र	५	मं	१९	मं	३	बु	१८	गु	३	शु	१७	शु	X	X	X	X		
पूर्णिमा/अमा.	१३	बु	२८	गु	११	गु	२७	श	१३	श	२८	र	११	र	२७	मं	११	मं	२६	बु	१०	गु	२४	गु	९	शु	२४	श	८	र	२२	र	६	सो	२०	सो	६	बु	२०	बु	४	गु	१९	शु	४	श	१८	श	X	X	X	X		

जैन व्रत एवं पर्व :
 ऋषभदेव निर्वाण दिवस - १० फरवरी, २०२१
 कविबर बनारसीदास जयन्ती - २३ फरवरी, २०२१
 श्री ऋषभदेव जयन्ती - ५ अप्रैल, २०२१
 अष्टान्हिका : (१) २१ मार्च से २८ मार्च, २०२१
 (२) १७ जुलाई से २४ जुलाई, २०२१
 (३) ११ नवम्बर से १९ नवम्बर, २०२१

श्री महावीर भगवान जयन्ती - २५ अप्रैल, २०२१
 श्री कानजीस्वामी जयन्ती - १३ मई, २०२१
 अक्षय तृतीया - १४ मई, २०२१
 श्रुत पंचमी - १५ जून, २०२१
 वीर शासन जयन्ती - २४ जुलाई, २०२१
 मोक्ष सप्तमी (पार्व. निर्वाण) - १५ अगस्त, २०२१

रक्षा बन्धन - २२ अगस्त, २०२१
 सोलहकारण व्रत - २३ अगस्त से २१ सितम्बर, २०२१
 दशलक्षण व्रत - १० सितम्बर से १९ सितम्बर, २०२१
 पुष्पांजलि व्रत - ११ सितम्बर से १५ सितम्बर, २०२१
 सुगन्ध दशमी - १६ सितम्बर, २०२१
 रत्नव्रत - १८ सितम्बर से २० सितम्बर, २०२१

अनन्त चतुर्दशी - १९ सितम्बर, २०२१
 श्री भगवान महावीर निर्वाणोत्सव (दीपावली) - ४ नवम्बर, २०२१
 श्री कानजीस्वामी स्मृति दिवस - २६ नवम्बर, २०२१
 जयपुर पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव - २६ से २८ फरवरी, २०२१
 टोडरमल महाविद्यालय स्थापना दिवस - २४ जुलाई, २०२१

शिक्षण प्रशिक्षण शिविर - १६ मई से २ जून, २०२१ तक, -----
 महाविद्यालय शिविर - ८ अगस्त से १५ अगस्त, २०२१ तक, जयपुर
 शिक्षण शिविर - १० अक्टूबर से १७ अक्टूबर, २०२१ तक, जयपुर
अनुज कुमार जैन 'ज्योतिर्विद' मो. ९८३७७१३५९८
 अलीगंज, जिला-एटा, (उ.प्र.) के सौजन्य से

X तिथि क्षय * जैनव्रत एवं पर्व

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ

9

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्लु

तीसरा छन्द

(गतांक से आगे...)

पर में ममत्व एवं कर्तृत्व बुद्धि से उत्पन्न इन मोह-राग-द्वेष परिणामों को जड़मूल से उखाड़ फेंकने वाले इस महासिद्धान्त को जगत के सामने रखकर आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने हम सब का महान उपकार किया है; क्योंकि जगतजनों के जीवन का सर्वाधिक समय इसी चिंता और आकुलता-व्याकुलता में जाता है कि कोई हमें मार न डाले, दुःखी न कर दे; मैं पूर्ण सुरक्षित रहूँ, जीवित रहूँ, सुखी रहूँ।

अपनी सुरक्षा के उपायों में ही हमारी सर्वाधिक शक्ति लग रही है, बुद्धि लग रही है, श्रम लग रहा है। अधिक क्या कहें - हमारा सम्पूर्ण जीवन ही इसी के लिए समर्पित है, इसी चिन्ता में बीत रहा है।

पड़ौसी पड़ौसी से आतंकित है, आशंकित हैं; एक-दूसरे के विरुद्ध षड्यंत्र रचने में संलग्न है, सुरक्षा के नाम पर विनाश की तैयारी में मग्न है; निराकुलता और शान्ति किसी के भी जीवन में दिखाई नहीं देती।

इस मूढ़ जगत ने अपनी सुरक्षा के नाम पर संसार के विनाश की इतनी सामग्री तैयार कर ली है कि यदि उनका शतांश भी उपयोग में आ जावे तो सम्पूर्ण मानव जाति ही समाप्त हो सकती है।

आश्चर्य और मजे की बात तो यह है कि हमने इस मारक क्षमता का विकास सुरक्षा के नाम पर किया है, यह सब अमरता के लिए की गई मृत्यु की ही व्यवस्था है।

घटिया माल को बढ़िया पैकिंग में प्रस्तुत करने का अभ्यस्त यह जगत हिंसक कार्यों के लिए भी अहिंसक शब्दावली का प्रयोग करने में इतना माहिर हो गया है कि मछलियाँ मारने का काम भी मत्स्य पालन उद्योग के नाम से करता है, कीटाणुनाशक (एन्टी बाइटिक्स) दवाओं को भी जीवन रक्षक दवाइयाँ कहता है।

इसप्रकार यह जगत हथियारों का अंबार लगाकर अपने

को सुरक्षित करना चाहता है; पर भाई! हथियार तो मृत्यु के उपकरण हैं, जीवन के नहीं; इस सामान्य तथ्य की ओर आपका ध्यान क्यों नहीं जाता?

हथियारों के प्रयोग से आज तक किसी का जीवन सुरक्षित तो हुआ नहीं, मौत का ताण्डव अवश्य हुआ है।

इस परमसत्य के स्पष्टीकरण के लिए मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि भारत में लगभग एक करोड़ जैन रहते हैं, यदि उनके घरों की तलाशी ली जावे तो एक प्रतिशत घरों में भी कोई भी शस्त्र नहीं मिलेगा। जैन मन्दिरों की तो यह हालत है कि आग्नेय शस्त्र (बन्दूक-पिस्तोल) तो बहुत दूर, किसी भी मन्दिर में एक लाठी भी प्राप्त नहीं होगी।

शस्त्रों से विहीन इस अहिंसक समाज का एक भी व्यक्ति शस्त्रों से बेमौत नहीं मरता, सभी अपनी सहज मौत से ही मरते हैं।

दूसरी ओर देखें तो पंजाब के घर-घर में हथियार हैं और गुरुद्वारे तो हथियारों से भरे पड़े हैं। जब भी किसी गुरुद्वारे का सैनिकों द्वारा ऑपरेशन होता है तो वे हथियारों के पहाड़ों से पटे मिलते हैं, फिर भी वे लोग सुरक्षित नहीं हैं। हम प्रतिदिन समाचार-पत्रों में पढ़ते हैं कि आज इतने मरे और आज इतने मरे। नहीं मरने का तो कोई सवाल ही नहीं है।

बस अब तो इतना ही देखना होता है कि आज कितने मरे? ऐसा कोई दिन नहीं जाता कि जिस दिन पंजाब में दस-बीस हत्याएँ न होती हों। यह सब क्या है?

इससे तो यही सिद्ध होता है कि शस्त्र सुरक्षा के साधन नहीं हैं, अपितु मौत के ही मौन आमंत्रण हैं; क्योंकि जिनके पास हथियार नहीं होते, वे हथियारों से नहीं मरते; पर जिनके पास हथियार होते हैं, वे प्रायः हथियारों से ही मारे जाते हैं।

मान लीजिए मेरे पास दस हजार रुपये हैं और वे रुपये मुझ निहत्थे से कोई छीनना चाहता है तो उसे हथियार लाने की कोई आवश्यकता नहीं है, एक डंडा ही पर्याप्त है। डंडा भी मारने की आवश्यकता नहीं है, दिखाना ही पर्याप्त है; क्योंकि डंडा दिखाने मात्र से ही उसे रुपये प्राप्त हो जायेंगे।

इसप्रकार मेरा शस्त्रों से मरना तो बहुत दूर, डंडे से

पिटना भी संभव नहीं है; किन्तु यदि किसी हथियार वाले को लूटना हो तो लुटेरों को हथियारों से सुसज्जित होकर ही आना होगा। लुटेरे उसके रुपये तो लूटेंगे ही, जान से भी मार सकते हैं; क्योंकि उससे उन्हें सदा खतरा बना रहेगा।

इसप्रकार यह सुनिश्चित है कि हथियार सुरक्षा के साधन नहीं, मौत के ही सौदागर हैं। फिर भी कुछ लोग कहते हैं कि हमारे हथियारों के भय से हम पर कोई आक्रमण करने की हिम्मत ही नहीं करेगा, अतः हम सुरक्षित रहेंगे। ऐसा सोचने वालों से मेरा कहना यह है कि यदि यह मान भी लिया जाय कि तुम्हारे शस्त्रों के भय से तुम पर कोई आक्रमण नहीं करेगा; पर जब तुम स्वयं बीमार होकर मरोगे, तब क्या होगा?

इस आशंका से आकुल-व्याकुल इस जगत ने अनेक प्रकार की औषधियों का निर्माण किया है। 'कोई मार न दे' - इस आशंका से एक प्रकार की गोलियाँ (अणुबम) बनाई हैं तो 'बीमारियों से स्वयं ही न मर जावें' - इस भय से दूसरे प्रकार की गोलियों (दवाइयाँ) बनाई हैं। जीवन रक्षक (एन्टीबाइोटिक्स) दवाइयों का उत्पादन इसी इसी आकांक्षा का परिणाम है।

इसप्रकार यह स्वयं को गोलियों के बल पर मरण भय से मुक्त करना चाहता है, पर आजतक तो इसमें किसी को सफलता प्राप्त हुई नहीं है; क्योंकि अभी तक तो कोई सदेह अमर हो नहीं पाया है। लाखों लोगों को दम तोड़ते हम प्रतिदिन देखते ही हैं।

इसीप्रकार सुखी रहने और दुःख दूर करने के लिए भी इसने दर्दनाशक दवाओं का निर्माण किया है। खाना-पीना, उठना-बैठना, सोना सभी प्रकार के भोगों का भोगना एवं भोगसामग्री इकट्ठी करना भी इसी आकांक्षा का परिणाम है।

पर इतना सब-कुछ कर लेने के बाद भी न तो यह अमर ही हो सका है और न ही सुखी ही; क्योंकि अमर और सुखी होने का जो रास्ता इस जगत ने चुना है, वह सम्यक् नहीं है। न तो शस्त्र सुरक्षा के साधन ही हैं और न दवाइयाँ दुःख दूर करने में समर्थ हैं; क्योंकि न तो वे लोग सुरक्षित ही दिखाई देते हैं, जो शस्त्रों की सुरक्षा में रहते हैं

और न वे सुखी दिखाई देते हैं, जो प्रतिदिन दस-पाँच गोलियाँ तो खाते ही हैं।

भारतवर्ष में ऐसे अनेक नग्न दिगम्बर संत मिलेंगे, जिन्होंने जीवन में एक भी गोली नहीं खाई होगी। दिन में एक बार शुद्ध सात्विक आहार लेनेवाले, दूसरी बार जल का बिन्दु भी ग्रहण नहीं करने वाले वीतरागी संत सौ-सौ वर्ष की आयु पर्यन्त पूर्ण स्वस्थ दिखाई देते हैं और अपनी पूर्ण आयु को चलते-फिरते आत्मसाधना में रत रहते हुये आनन्द से भोगते हैं; जबकि प्रतिदिन अनेक गोलियाँ खाने वाले, दिन-रात भक्ष्य-अभक्ष्य पौष्टिक पदार्थ भक्षण करनेवाले जगतजन भरी जवानी में ही जवाब देने लगते हैं।

इसप्रकार यह अत्यन्त स्पष्ट है कि न तो हथियार सुरक्षा के साधन हैं, और न ही भोगोपभोग सामग्री तथा औषधियाँ सुखी होने का वास्तविक उपाय हैं; आयुकर्म का उदय जीवन का आधार है और शुभकर्मों का उदय लौकिक सुखों का साधन है।

ये कर्म भी जीव स्वयंकृत शुभाशुभ भावों के अनुसार स्वयं ही बाँधता है। इसप्रकार यह प्राणी अपने जीवन-मरण और सुख-दुःख का पूर्ण उत्तरदायी स्वयं ही है, अन्य किसी का इसमें रंचमात्र भी हस्तक्षेप नहीं है।

इसी बात को यहाँ बड़ी दृढ़ता से प्रस्तुत किया गया है कि जो यह मानते हैं कि मैं दूसरों को मारता हूँ या उनकी रक्षा करता हूँ अथवा दूसरे मुझे मारते हैं या वे मेरी रक्षा करते हैं; वे मूढ़ हैं, अज्ञानी हैं; और ज्ञानी इससे विपरीत हैं, क्योंकि ज्ञानी ऐसा नहीं मानता; वह तो यह स्वीकार करता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने सुख-दुःख और जीवन-मरण का पूर्ण उत्तरदायी स्वयं ही है, कोई किसी के जीवन-मरण और सुख-दुःख का कर्ता-हर्ता-धर्ता नहीं है।^१

अनिर्णय की स्थिति में पड़े हुए संशयग्रस्त प्राणी के भय और दीनता का एक ही कारण है और यह है अन्य को अपने जीवन-मरण और सुख-दुःख का कारण मानना।

इसीप्रकार इसके अभिमान का कारण भी यह मानना है कि मैं दूसरों को मार सकता हूँ, बचा सकता हूँ; सुखी-दुःखी कर सकता हूँ।^२

किसी अन्य के कुछ करने-धरने से तो हमारा हित-अहित होता ही नहीं है; किसी के आशीर्वाद और शाप से भी कुछ नहीं होता।^१

‘मैं दूसरों को मारता हूँ या बचाता हूँ अथवा सुखी-दुःखी करता हूँ’ - यह मान्यता अभिमान की जननी है और ‘दूसरे जीव मुझे मारते हैं बचाते हैं, सुखी-दुखी करते हैं’ - यह मान्यता दीनता पैदा करती है, भयाक्रांत करती है, अशांत करती है, आकुलता-व्याकुलता पैदा करती है।

अतः यदि हम अभिमान से बचना चाहते हैं, दीनता को समाप्त करना चाहते हैं, आकुलता-व्याकुलता और अशांति से बचना चाहते हैं, निर्भर होना चाहते हैं तो उक्त मिथ्या मान्यता को तिलांजलि दे देना ही श्रेयस्कर है, जड़मूल से उखाड़ फेंकना ही श्रेयस्कर है - सुखी और शांत होने का एकमात्र यही उपाय है।^२”

इसी परम सत्य की ओर ध्यान दिलाया गया है इस तीसरे छन्द में।

अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि मेरा कर्ता-धर्ता मैं ही हूँ, अन्य कोई नहीं। इसीप्रकार मैं स्वयं में ही रहनेवाला हूँ; क्योंकि मेरी सुख-शान्ति मुझमें ही है। पर पदार्थों में से मुझे कुछ भी मिलने वाला नहीं है।

उक्त विचार का मंथन करने वाले ज्ञानीजनों के जीवन में अनन्त शान्ति देखने में आती है, होती है।

अतः प्रत्येक आत्मार्थी भाई-बहिन का कर्तव्य है कि वे इस गीत की उक्त पंक्तियों का पाठ बार-बार करें, उनमें समागत विचारों पर गंभीरता से विचार कर अतीन्द्रिय आनन्द और आत्मीक शान्ति प्राप्त करें। (क्रमशः)

१. आत्मा ही है शरण, पृष्ठ - ११८, २. वही, पृष्ठ - ११९

युगलजी की पुण्य स्मृति मनाई

बाबू जुगलकिशोरजी ‘युगल’ कोटा की पांचवीं पुण्य स्मृति पर मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका (MONA) द्वारा स्मरांजलि सभा दिनांक 26 सितम्बर को आयोजित की गयी, जिसमें बाबूजी का सी.डी. प्रवचन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, ब्र. हेमचंद्रजी ‘हेम’ देवलाली, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित ज्ञाताजी झांझरी, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, श्री चेतनभाई, श्री प्रकाशभाई, ब्र नीलिमा दीदी कोटा एवं अनेक विद्वानों ने बाबूजी के विराट व्यक्तित्व, जीवन-दर्शन, संस्मरण तथा युगल वाणी से परिचित कराया।

तृतीय महिला ज्ञान शिविर संपन्न

पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा दिनांक 25 से 27 सितम्बर तक तृतीय महिला ज्ञान शिविर ऑनलाइन आयोजित हुआ, जिसका विषय था चार अनुयोग।

इस अवसर पर विदुषी राजकुमारी दीदी दिल्ली ने द्रव्यानुयोग की प्रयोगात्मक विधि, ब्र. सुजाता दीदी कुम्भोज बाहुबली ने करणानुयोग की प्रयोगात्मक विधि, ब्र. विमला दीदी जयपुर ने करणानुयोग का प्रयोजन और प्रमादी बुद्धि का निराकरण, ब्र. आरती दीदी छिन्दवाड़ा ने चरणानुयोग की प्रयोगात्मक विधि, ब्र. नीलिमा दीदी कोटा ने प्रथमानुयोग का प्रयोजन और रागादि बुद्धि का निषेध, ब्र. समता झांझरी उज्जैन ने चरणानुयोग का प्रयोजन और निमित्त-नैमित्तिक संबंध की पुष्टि, ब्र. वासंतीबेन देवलाली ने प्रथमानुयोग की प्रयोगात्मक विधि, ब्र. जीनल दीदी देवलाली ने द्रव्यानुयोग का प्रयोजन और स्वच्छन्द प्रवृत्ति का निषेध एवं विदुषी स्वानुभूति शास्त्री मुम्बई ने चारों अनुयोगों का क्रम विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक से प्रकाशित जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) एवं वीतराग-विज्ञान (मासिक) पत्रिकाएं ईमेल या मोबाइल पर मंगाने हेतु - सम्पर्क करें - 9660668506 (पीयूष कुमार जैन)



संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल



सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचें तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2020

प्रति,

